

सूरह कारिअह^[1]- 101

سُورَةُ الْقَارِعَةِ

सूरह कारिअह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत को ((कारिअह)) कहा गया है। अर्थात् खड़ खड़ाने वाली आपदा। और इसी से इस का यह नाम रखा गया है।
- आयत 1 से 5 तक प्रलय के समय की स्थिति से सूचित किया गया है।
- आयत 6, 7 में जिन के कर्म न्याय के तराजू में भारी होंगे उन का अच्छा परिणाम बताया गया है।^[1]
- आयत 8 से 11 तक में उन का दुष्परिणाम बताया गया है जिन के कर्म न्याय के तराजू में हल्के होंगे। और नरक की वास्तविकता बताई गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|---|------------------------------------|
| 1. वह खड़खड़ा देने वाली। | الْقَارِعَةُ ۝ |
| 2. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली? | مَا الْقَارِعَةُ ۝ |
| 3. और तुम क्या जानो कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है? ^[2] | وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝ |

- 1 यह सूरह भी मक्की है और इस का विषय भी प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आखिरत) है। इस में प्रश्न के रूप में सर्वप्रथम सावधान कर के दो वाक्यों में प्रलय का चित्रण कर दिया गया है कि उस दिन सभी घबरा कर इस प्रकार इधर उधर फिरेंगे जैसे पतंगे प्रकाश पर बिखरे होते हैं। और पर्वतों की यह दशा होगी कि अपने स्थान से उखड़ कर धुनी हुई ऊन के समान हो जायेंगे। फिर बताया गया है कि परलोक में हिसाब इस आधार पर होगा कि किस के सदाचार का भार दुराचार से अधिक है और किस के सदाचार का भार उस के दुराचार से हल्का है। प्रथम श्रेणी के लोगों को सुख मिलेगा। और दूसरी श्रेणी के लोगों को आग से भरी गहरी खाई में फेंक दिया जायेगा।
- 2 (1-3) "कारिअह": प्रलय ही का एक नाम है जो उस के समय की घोर दशा का

4. जिस दिन लोग बिखरे पतिंगों के समान (व्याकुल) होंगे।
5. और पर्वत धुनी हुई ऊन के समान उड़ेंगे।^[1]
6. तो जिस के पलड़े भारी हुये
7. तो वह मन चाहे सुख में होगा।
8. तथा जिस के पलड़े हल्के हुये
9. तो उस का स्थान "हाविया" है।
10. और तुम क्या जानो कि वह (हाविया) क्या है?
11. वह दहक्ती आग है।^[2]

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ۝

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ۝

نَارُ حَامِيَةٍ ۝

चित्रण करता है। इस का शाब्दिक अर्थ: द्वार खटखटाना है। जब कोई अतिथि अकस्मात रात में आता है तो उसे दरवाजा खटखटाने की आवश्यकता होती है। जिस से एक तो यह ज्ञात हुआ कि प्रलय अकस्मात होगी। और दूसरा यह ज्ञात हुआ कि वह कड़ी ध्वनी और भारी उथल पुथल के साथ आयेगी। इसे प्रश्नवाचक वाक्यों में दोहराना सावधान करने और उस की गंभीरता को प्रस्तुत करने के लिये है।

- 1 (4-5) इन दोनों आयतों में उस स्थिति को दर्शाया गया है जो उस समय लोगों और पर्वतों की होगी।
- 2 (6-11) इन आयतों में यह बताया गया है कि प्रलय क्यों होगी? इसलिये कि इस संसार में जिस ने भले बुरे कर्म किये हैं उन का प्रतिकार कर्मों के आधार पर दिया जाये, जिस का परिणाम यह होगा कि जिस ने सत्य विश्वास के साथ सत्कर्म किया होगा वह सुख का भागी होगा। और जिस ने निर्मल परम्परागत रीतियों को मान कर कर्म किया होगा वह नरक में झोंक दिया जायेगा।